DESALITE NEWSLETTER

sancharan

January 2021 **Newsletter by the Department of Hindi** **SFS / Hindi 01 / Jan 2021**

(साहित्य संगीत और कला से हीन पुरूष साक्षात् पशु ही है जिसके पूँछ और् सींग नहीं हैं।) - भर्तृहरि

जिस मनुष्य में भावना का संचार न हो, जिसे अपने राष्ट्र से प्रेम नहीं, उसका ह्रदय ह्रदय नहीं पत्थर है.

- रामधारी सिंह दिनकर

Inside this issue:

PRINCIPAL'S MESSAGE

HOD'S MESSAGE

विभागाअध्यक्ष का संदेश.....

प्रिय बच्चों,

शिक्षा के साथ साथ हमारी अन्य प्रतिभाओं को भी निखारना अत्यंत आवश्यक है | इसके लिए विचारों को गति देना महत्वपूर्ण बन जाता है क्योंकि शिक्षाकाल का समय ही हमारे लिए सुनहरा समय है जहाँ हम अपने अंदर की छिपी प्रतिभा को वाद विवाद, लघु नाटिका, आशु भाषण, कविता वाचन, रचनात्मक लेखन द्वारा और भी निखारते हैं |

हिन्दी विभाग का सुरभि संघ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और संवाद पत्र द्वारा एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ हमारे सम्मुख नवीन कवि, कलाकार, लेखक प्रकट होते हैं | जो आगे चलकर न केवल अपने व्यक्तित्व में निखार लाते हैं अपितु समाज में बड़ा योगदान देते है |

तो आइए हम सब अपनी प्रतिभा को और भी निखार कर एक नया आयाम दें |

हिन्दी विभाग की ओर से शुभकामनाएँ |

डॉ रेवा प्रसाद

गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो मिलाय ॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

--कबीर

“हमारे वीर योध्दा”

वो कहते, आँसू मत बहाओ हम मरे नहीं है!
हम तो अपने कर्तव्य का निर्वाह करते शहीद हुए है ।।

जज्बात क्या होता है सीखो इनसे,
जिस मौत से हम डरते है, ये वीर उसे गले लगाते चलते है ।।

चाहे आंधी आए या तूफान या आए गोलियों कि बौछार,
ये कभी रुकते नहीं! कभी थकते नहीं ।।

हमारे वीर है बडे कठोर, बहुत सख्त दुश्मनों के लिए,
पर बात जब अपनों कि आती है तब ममता में पिघल जाते है ।।

तुम अगर चैन से सोते हो तो याद रखना,
सरहद पर कोई तुम्हारे लिए जाग रहा है ।।

ये वीर कहते!
हमें लालज नहीं है पैसो का, ना लालज है शोहरत का,
केवल है तो एक ख्वाहिश, अपनी मिट्टी के लिए मर मिटने का,
तिरंगो में लिपटे घर लौटने का।।

वो कहते! हाँ दूर हूँ में अपनी जननी से,
लेकिन हूँ पास अपनी जन्म भूमि के,

जब याद आती है जननी की,
तब भारत माँ का प्रेम उस याद को भर देता हैं ।।

बलिदान का सही अर्थ सीखो इनसे,
इनके भी है परिवार, इनके भी है जज्बात,
लेकिन कहते है, मेरे लिए मेरा वतन पहले है बाकी सब बाद में ।।

ये है हमारे वीर, हमारे भारत कि शान,
जिनका हर साँस है भारत माँ के नाम ।।

आज घड़ी है उन्हें सलाम करने का,
जो अपने लिए जिए नहीं, पर मर मिट गए अपने वतन के लिए ।।

खून के अंतिम बूंद तक लडकर चले भारत माँ कि गोद में आराम करने,
जाते-जाते मुस्कुराते कह गए,
आँसू मत बहाओ हम मरे नहीं है!
हम तो अपने कर्तव्य का निर्वाह करते शहीद हुए है ।।

जय हिंद

पूजा एन (19C356H)
III सेमेस्टर बीकॉम ई

बच्चों के लिए लिक्षा के महत्व

बच्चों के लिए लिक्षा के महत्व पर एक िंबा िेख 6,7,8,9 व ं कक्षा के छात्रों के लिए सहायक है, और 10. बच्चों के लिए लिक्षा का महत्व िेख उनके कक्षा असाइनमेंट, समझ के कायों, िेख िेखन के साथ छात्रों की मदद करता है , बहस, और यहां तक कक प्रततयोग परीक्षाएं। लिक्षा बच्चे के ज वन में अत्यधिक आवश्यक है और ज वन में बाद में उसकी वयस्कता की सफिता की न ंव रखत है। यह एक ऐसे उपकरण के रूप में कायय करता है जो यह तय करता है कक व्यक्तत वयस्क के रूप में संतुष्ट था या खुि था या उदास और भावनात्मक रूप से ववचलित व्यक्तत के रूप में सामने आता है।

तया आप जानते हैंकक दतुनया भर में िगभग 70 लमलियन बच्चों को स्कूि आन-ेजाने के अवसर की कम है। अके िे अफ्रीकी देिों में रहने वािे िगभग 32 लमलियन बच्चों के पास स्कूि जाने का अवसर नहीं है। भारत ने 6 से 14 वर्य की आयुके बच्चों के लिए लिक्षा को अतनवायय बनाने के लिए लिक्षा का अधिकार अधितनयम 2009 िागूककया हैऔर इस प्रकार यह दतुनया में सबसे तेज से बढ़त अथयव्यवस्थाओं में से एक के रूप में ववकलसत होने के लिए भारत का नेतत्ृव करता है। 2030 तक संयुतत राष्ट्र के िक्ष्यों को बनाए रखने के लिए राष्ट्रों तक पहुुँचने के लिए, उन्हें बाि लिक्षा पर अधिक पैसा िागूकरना और खचय करना होगा। बच्चों के लिए लिक्षा का महत्व ‘एक है

बच्चों के लिए लिक्षा के महत्व के पीछे कारण

“बच्चों के लिए लिक्षा का महत्व ‘5 साि से 16 साि की उम्र के बच्चों के लिए लिक्षा प्रदान करने के लिए दतुनया भर के कई देिों द्वारा बनाई गई एक स्थापना है। बच्चों और इसके लिए लिक्षा के महत्व के प छे कारण हैं। राष्ट्र को िाभ।

खुद की जंग खुद से

तेरी हिम्मत तुझसे ही है उसे किसी की आस नहीं
क्यों ढूंढ रही तू उसे जो तेरे पास नहीं

तेरी नींद गहरी है तू उसपे विश्वास कर
अपने अंदर के सपनों का तू एहसास कर (२)
क्यों कोई तेरे सपनों में आये किसमें है
दम जो तुझे नींद से जगाये

है दम तुझमे तू बस खुद को तैयार कर
आँख मूंदे सपनो में जाकर तू उसपर प्रहार कर
कर खुद पर यकीं विजय तू होगी
अँधेरी के पार कही तो रोशनी होगी

रौशनी आते ही अंधेरा हट जायेगा तेरे रूप के सामने वो
इंसान थरथरायेगा (२)
बस कर यकीं ख़ुद पे
तेरा वक़्त भी आएगा
की तेरे सपनों का हर ख़ौफ़ मिट जाएगा... **(२)**

दीपशिखा
(B.SC I SEMESTER)

ऑनलाइन शिक्षा

इस वक्त कोरोना वायरस (महामारी) के कारण ऑनलाइन क्लासेस चल रही है। जिससे की लॉकडाउन के कारण बच्चों की पढ़ाई पर इसका विपरीत असर न पड़े। इसी के साथ ही बच्चों को भी ऑनलाइन क्लासेस में मजा आने लगा है। उन्हें शिक्षकों द्वारा प्रोजेक्ट भी दिए जा रहे, साथ ही उन्हें रचनात्मक कार्यों से भी जोड़ा जा रहा है। लेकिन हर चीज के दो (२) पहलू होते हैं। ऑनलाइन क्लासेस जहां बच्चों के लिए फायदेमंद साबित हो रही है, तो वही इसके कुछ नुकसान भी सामने आ रही है।

ऑनलाइन क्लासेज की फायदे-
•बच्चों को कोचिंग के लिए नहीं जाना पढ़ रही है वहां आने-जाने का समय बच रहा है।
•ऑनलाइन क्लासेज से बच्चों को थकान नहीं हो रही है वह घर पर ही बच्चे पढ़ाई कर पा रहे हैं।
•बच्चे एकांत में आराम से पढ़ सकते हैं।
•बच्चों को जब मन करें तब क्लास को डाउनलोड करके देख सकते हैं।
•बच्चे पूरे समय अपने माता पिता के सामने सुरक्षा की दृष्टि से रहते है।
•बच्चों को पढ़ाई मैं कुछ समस्या आती तो, वह बात भी माता-पिता को पता चलती है।

ऑनलाइन क्लासेज की नुकसान-
•बच्चों को क्लास जैसे वातावरण नहीं मिल पा रहा है।
•ऑनलाइन क्लास में शिक्षकों के साथ सहभागिता नहीं कर पाते।
•क्लास के कई बच्चे रहते हैं बच्चों के संदेह को जवाब देने में शिक्षकों को कष्ट होता है।
•मोबाइल, लैपटॉप का ज्यादा उपयोग बढ़ गया है। जिससे स्क्रीन की वक्त बढ़ने से आंखों पर इसका असर पढ़ने का खतरा है।
•जहां माता-पिता अपने बच्चों को मोबाइल से दूर रखना चाहते थे, वही ऑनलाइन क्लास से बच्चों को मोबाइल दिया जा रहा है।
•लंबे समय तक मोबाइल का इस्तेमाल करने से कई बार मोबाइल गर्म हो जाता है और ऐसे में दुर्घटाना की आशंका भी रहते हैं।

निष्कर्ष:-

ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए बढ़िया विकल्प है जो काम करते हुए या घर की देखभाल करने के साथ अपनी पढ़ाई जारी रख पाते हैं। अपने सुविधा अनुसार वहां ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यह तक नहीं प्रकार की शिक्षा है जो हर देश अपना रहा है। विद्यार्थियों को जरूरत है कि वह मन लगाकर पढ़ें। अपने और अपने देश का भविष्य उज्जवल करें। जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षा को पाने में असमर्थ है उनके लिए निशुल्क ऑनलाइन शिक्षा के व्यवस्था करने की जरूरत है। ऑनलाइन शिक्षा जितने ही फायदे हैं उतने ही नुकसान है।

लावण्या.ए
20D023.
1st- BCA.

आया एक कलाम

अग्नि को जिसने दी उड़ान
पृथ्वी को किया चलायमान
सपनों को भी उड़ने दिया आसमान
राष्ट्र सपूत अद्भुत तू है "कलाम "||

हर सपना सच करने को
निर्जीव में जीवन भरने को
दुनिया में परिवर्तन लाने को
मानव में मानवता सिखलाने को
जन्म लेता केवल एक बार
'महापुरुष ' नहीं आते धरती पर बार -बार ||

राम ,कृष्ण ,बुद्ध ,महावीर ने लिया यहाँ अवतार
लोक कल्याण कर ,दिया धरा को तार
युगों -युगों में होता कोई एक अवतार ,
और बनता विश्व परिवर्तन का आधार ||

काम ,क्रोध,लोभ, मोह ,द्वेष से परे
इन्हें त्याग 'कलाम' सबसे उपर खड़े ,
ऊँच ,नीच,जाति ,धर्म का भेद छोड़
मानव धर्म से दिया सबका नाता जोड़ ||

राष्ट्रभक्ति मानव शक्ति में है समाया,
धरती और गगन का रहस्य तुमने बतलाया,
तेरे लिए नहीं कोई पराया
हर बच्चे में अब तू है समाया ||

'कलाम' नये सपने में पंख हम लगाएँगे,
देश का 'मिशन ' पूरा कर हम दिखलाएँगे,
'युवाशक्ति' हम देश के लिए काम आएँगे,
दूर नहीं वह दिन ,"विश्वगुरु" फिर से कहलाएँगे ||

"डॉ.रिंकू पांडेय"

sancharan is a Newsletter published from the **Department of Humanities - St. Francis de Sales College, Electronic City, Bengaluru - 560100.** It highlights the activities of the department and serves as a link between the department as well as other colleges.

You are welcome to send your suggestions and feedback to *sfsnewsletters@gmail.com*

Editorial Board : Fr. Jijo Manjackal, Prof. Lavin,

Design and Layout : Mr. Richie Raju.